International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 51-57 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

इकबाल का शैक्षिक दर्शन

डॉ. नाज़नी बेगम[1], सारिम अब्बास[2]
एम. जी. कॉलेज, गया

Date of Submission: 01-09-2026 Date of Acceptance: 08-09-2026

सारांश

अल्लामा मोहम्मद इकबाल, 20वीं सदी के महान दार्शनिकों में से एक, ने मानव अस्तित्व के एक गतिशील दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया, जो बनने और विकास की अवधारणाओं में गहराई से निहित है। उनकी दर्शनशास्त्र आध्यात्मिक, तत्वमीमांसा (metaphysical) और अस्तित्ववादी (existential) आयामों को समाहित करती है, जिससे आत्म-साक्षात्कार और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक रूपरेखा मिलती है। इकबाल की शैक्षिक दर्शन को दार्शनिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करते हुए, यह अस्तित्ववादी, ज्ञानमीमांसीय (epistemological) और नैतिक प्रश्नों में गहराई तक जाती है। इस्लामी तत्वमीमांसा में जड़ें होने के साथ-साथ आधुनिक दार्शनिक प्रवृत्तियों से प्रभावित, इकबाल की शैक्षिक दर्शन मानव उद्देश्य, ज्ञान की प्रकृति और शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। एक राष्ट्र की शैक्षिक प्रणाली को उसकी सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक होना चाहिए। लेकिन उपमहाद्वीप में, पश्चिमी संस्कृति के प्रभुत्व ने एक महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। परिणामस्वरूप, लोग अपने इतिहास और विरासत को नजरअंदाज करने लगे, और अपनी अनूठी पहचान को बनाए रखने या अपनी रचनात्मक क्षमता को पोषित करने में असफल रहे।

मुख्य शब्द: तत्वमीमांसा, अस्तित्ववाद, Übermensch, ज्ञानमीमांसा, खुदी, द्वैतीयता ।

इकबाल ने अपनी पुस्तक "रमूज़-ए-बेखुदी" में लिखा: "तुमने ज्ञान अजनबियों से प्राप्त किया और अपने चेहरे को उनकी चमक से चमकाया। तुम उनकी आदतों से अपनी किस्मत उधार लेते हो, और मैं नहीं जानता कि तुम स्वयं हो या कोई और। तुम्हारा मन उनकी विचारधारा से बंधा हुआ है, तुम्हारी आवाज उनके सुरों पर आधारित है। तुम्हारे होठों से उधार की बातचीत निकलती है। तुम्हारे दिलों में उधार की इच्छाएँ निवास करती हैं। कब तक यह परिक्रमा सभा की आग के चारों ओर? क्या तुम्हारे पास दिल है? तो अपने ही अग्नि में जलो। व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से अद्वितीय बनता है। एक राष्ट्र सच्चा तभी बनता है जब वह अपने प्रति सच्चा हो।"

इकबाल की यह विचारधारा शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं मानती, बल्कि इसे आत्म-साक्षात्कार और रचनात्मकता के विकास का एक उपकरण मानती है। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य मानव को उसकी वास्तविकता और उद्देश्य की ओर ले जाना चाहिए, और उसे अपने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना चाहिए।

तत्वमीमांसीय आधार: खुदी की अवधारणा

खुदी का केंद्रीय महत्व:

अल्लामा मोहम्मद इकबाल की दार्शनिक विचार धारा का केंद्रबिंदु "खुदी" (आत्मा) है। यह एक प्रभावशाली अवधारणा है जो उनकी मानव व्यक्तित्व, उद्देश्य और आध्यात्मिक क्षमता की दृष्टि को परिभाषित करती है। इकबाल के लिए, खुदी केवल एक तत्वमीमांसीय (metaphysical) विचार नहीं है, बल्कि एक परिवर्तनकारी शक्ति है, जो व्यक्तियों और राष्ट्रों की नियति को आकार देती है। इकबाल की दर्शनशास्त्र "खुदी" के विचार के इर्द-गिर्द घूमती है। उनका मानना है कि मानव अस्तित्व का सार अपनी खुदी को पहचानने में है, जो प्रत्येक व्यक्ति के भीतर मौजूद दिव्य चिंगारी से गहराई से जुड़ी होती है। अपनी पुस्तक "असरार-ए-खुदी" में उन्होंने लिखा:

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 51-57 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

"जब उन्होंने तुझे मिट्टी से बनाया, तब तुझमें प्रेम और भय को मिलाया गया। इस संसार का और परलोक का भय, मृत्यु का भय, पृथ्वी और स्वर्ग के सभी कष्टों का भय। धन का प्रेम और निर्धनता का प्रेम, देश का प्रेम, स्वयं का प्रेम, परिवार और पत्नी का प्रेम। जब तक तू 'ला इलाहा' के मंत्र का सहारा रखेगा, तब तक तू हर भय के जादू को तोड़ देगा। जिसके लिए ईश्वर उसकी आत्मा के समान है, वह असत्य के सामने अपना सिर नहीं झुकाता।"

खुदी इकबाल की दर्शन का मूलभूत आधार है। यह एक गहन और सशक्त अवधारणा है, जो व्यक्तियों को उनकी दिव्य क्षमता को पहचानने, जिम्मेदारी स्वीकारने, और मानवता की बेहतरी में योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। खुदी के माध्यम से, इकबाल एक ऐसी दुनिया की कल्पना करते हैं, जहां जागरूक आत्माएं व्यक्तिगत और सामूहिक महानता को प्राप्त करने में सक्षम हों। खुदी केवल आत्म-साक्षात्कार का मार्ग नहीं है, बल्कि यह मानवता को उसके वास्तविक उद्देश्य की ओर ले जाने वाला एक शक्तिशाली साधन है।

शिक्षा और आत्म-साक्षात्कार:

दार्शनिक रूप से, शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया बन जाती है जो खुदी को उजागर करने और मजबूत करने का कार्य करती है। यह व्यक्ति के सीमित आत्म को असीम के साथ संरेखित करती है, जिससे आध्यात्मिक विकास और व्यक्ति के अंतिम उद्देश्य की प्राप्ति संभव होती है। हर शैक्षिक दर्शन को यह स्पष्ट रूप से परिभाषित करना चाहिए कि वह किस प्रकार के आदर्श मानव का निर्माण करना चाहता है। इकबाल के शिक्षा दर्शन के अनुसार, एक अच्छा जीवन सक्रिय प्रयास और निरंतर संघर्ष से परिभाषित होता है। यह गतिविधि रचनात्मक और मौलिक होनी चाहिए, क्योंकि रचनात्मकता मानवता का सबसे कीमती और विशिष्ट उपहार है। व्यक्ति को अपने परिवेश के साथ निकटता से जुड़ना चाहिए, उसे लगातार अपने लक्ष्यों के अनुरूप आकार देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, एक गुणी व्यक्ति को बुद्धिमत्ता का सही उपयोग करना सीखना चाहिए। बुद्धि के माध्यम से, व्यक्ति प्रकृति पर अधिकार कर सकता है; लेकिन यह शक्ति मानवता की भलाई के लिए निर्देशित होनी चाहिए और प्रेम से मार्गदर्शित होनी चाहिए। बिना प्रेम के, शक्ति विनाशकारी बन सकती है।

इकबाल तीन आवश्यक गुणों पर जोर देते हैं जिन्हें शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए: साहस, सहिष्णुता, और फक्र (आध्यात्मिक विनम्रता और निःस्वार्थता) । वह कहते हैं कि साहस मजबूत चरित्र के विकास के लिए आवश्यक है, और शिक्षा को सभी प्रकार के डर को समाप्त करना चाहिए। जबकि प्रेम, यदि अनियंत्रित हो, आत्मा को कमजोर कर सकता है, जिससे चरित्र का भ्रष्ट होना संभव होता है, यह कई कमजोरियों का मूल होता है जैसे धोखाधड़ी, मतलबीपन, डरपोकपन और चापलूसी। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य इन दोषों को समाप्त करना और मजबूत चरित्र का पोषण करना होना चाहिए।

2. अस्तित्ववादी यात्रा: बनना और विकास

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में:

नीत्शे के Übermensch और बर्गसन के सृजनात्मक विकास के विचारों से प्रभावित होकर, इकबाल जीवन और शिक्षा को बनते रहने की गतिशील प्रक्रियाएँ मानते हैं। शिक्षा को व्यक्तियों को सीमाओं को पार करने और निरंतर विकसित होने के लिए तैयार करना चाहिए। इकबाल का "बनना" (Becoming) का विचार मानव अस्तित्व की गतिशील, निरंतर विकसित होती प्रकृति को रेखांकित करता है। अपनी काव्य रचना "Reconstruction of Religious Thought in Islam" में, उन्होंने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि जीवन निरंतर आत्म-निर्माण की प्रक्रिया है। इस्लामी शिक्षाओं, नीत्शे, बर्गसन और रूमी से प्रेरणा लेकर, इकबाल यह बताते हैं कि मानव आत्मा (ख़ुदी) स्थिर नहीं है, बल्कि यह प्रयास, संघर्ष और विकास का निरंतर मिलाजुला रूप है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 51-57 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

स्वतंत्रता और रचनात्मकता:

इकबाल शिक्षा की भूमिका पर जोर देते हैं, जो विचार की स्वतंत्रता और रचनात्मक क्रिया को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्ति अपने भाग्य को आकार देने में सक्षम होते हैं, न कि केवल ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में। इकबाल ने स्वतंत्रता को धार्मिक, सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सर्वोच्च मूल्य माना। उनके धार्मिक विचारों का पुनःव्याख्यान उनके समय की ऐतिहासिक आवश्यकताओं पर आधारित था, जो उनके विचारों के लिए एक दार्शनिक ढाँचा प्रदान करता था। सात्रे की तरह, इकबाल ने स्वतंत्रता को अपने मूल्य प्रणाली का शीर्ष स्थान दिया। जबकि स्वतंत्रता अस्तित्ववादी दार्शनिकता का केंद्रीय तत्व है, इकबाल की स्वतंत्रता की अवधारणा अस्तित्ववादी विचारकों, विशेषकर सात्रे, से कहीं अधिक व्यापक थी।

सात्रे, जिन्होंने ईश्वर के अभाव की घोषणा की और यह कहा कि "मनुष्य स्वतंत्र होने की सजा भुगतता है," एक दृष्टिकोण रखते हैं जो इकबाल के दृष्टिकोण से काफी भिन्न है। इकबाल ईश्वर के अस्तित्व को ब्रह्मांड के सृष्टा के रूप में मानते हैं, जो सर्वोत्तम स्वतंत्रता का प्रतीक हैं। इकबाल के अनुसार, मानव स्वतंत्रता भौतिक अवरोधों को पार करके प्राप्त की जाती है, हालांकि वह भौतिकता को प्रतिबंधात्मक नहीं मानते; बल्कि, यह स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करती है। सर्वोच्च स्वतंत्रता, इकबाल के अनुसार, यह नहीं है कि आत्मा ईश्वर में विलीन हो जाए; बल्कि, मानव आत्म-गौरव अपनी पहचान बनाए रखते हुए उच्चतर स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होता है।

इकबाल यह भी कहते हैं कि पैगंबर मुहम्मद का मिशन मानवता के बीच स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व की स्थापना करना था। यह विचार उनके काम "रुमुज़-ए-बेखुदी" (The Mysteries of Selflessness) में सुंदर रूप से व्यक्त किया गया है। "विश्वासियों के दिलों में सभी भाई हैं, स्वतंत्रता उसकी देह का सार है। भेदभाव से परे, वे सब समान हैं, उसकी आत्मा में समानता की गर्भवती शक्ति थी। इसलिए उसके बेटे खड़े होते हैं सीधे और स्वतंत्र, जैसे पुरानी शहतूत की ऊँची पत्तियाँ, उसमें नवाचार होता है, हाँ, तू ही है हमारा स्वामी।"

3. ज्ञानमीमांसा दृष्टिकोण: ज्ञान का एकीकरण

ज्ञान की एकता:

इकबाल धार्मिक और सांसारिक ज्ञान के बीच द्वैतीयता (dualism) को नकारते हैं। इस्लामी ज्ञानमीमांसा से प्रेरित होकर, वह एक एकीकृत दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, जहाँ तर्क (अक्ल) और रहस्योद्घाटन (वही) एक-दूसरे को पूरक रूप में काम करते हैं। इकबाल के वास्तविकता के बारे में विचार और उनका ज्ञान के प्रति दृष्टिकोण इस्लामी दर्शन के आधिकारिक रूप से आधारित हैं। उन्होंने पश्चिम में पुनर्जागरण के बाद उभरे अनुभववादी और संकेतक विश्लेषणात्मक परंपराओं की आलोचना की, जिन्हें उन्होंने मौलिक रूप से दोषपूर्ण माना। इकबाल के अनुसार, ये परंपराएँ तब जाम हो गईं क्योंकि वे अरस्तू के ज्ञान की श्रेणीकरण पर आधारित थीं, जिसने मान्य ज्ञान को केवल अनुभवजन्य क्षेत्र तक सीमित कर दिया था।

समीक्षात्मक विचार और अन्तर्दृष्टि:

जहाँ तर्क को महत्व देते हुए, इकबाल यह भी बताते हैं कि अंतर्दृष्टि (इश्क या प्रेम) का भी अत्यधिक महत्व है। शिक्षा को दोनों, तर्कपूर्ण जांच और आध्यात्मिक दृष्टि, दोनों को विकसित करना चाहिए, ताकि संसार की संतुलित समझ उत्पन्न हो सके। इकबाल मानव जीवन में बौद्धिकता और अंतर्दृष्टि के भूमिकाओं का अन्वेषण करते हैं। नैतिकता और दर्शन ने लंबे समय तक मानवता की बढ़ती गतिविधियों को नियंत्रित और निर्देशित करने की चुनौती का सामना किया है। जहाँ कुछ दार्शनिक जीवन की क्रियाओं के लिए बौद्धिकता को मुख्य मार्गदर्शक मानते हैं, वहीं इकबाल इसका विपरीत दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार, वास्तविकता को समझने के दो तरीके हैं। पहला तरीका है अवलोकन और संवेदी ज्ञान के माध्यम से, जो हमें वास्तविकता को उसके कालिक पहलुओं में टुकड़ों में देखने की अनुमति देता है–यह प्रक्रिया विश्लेषणात्मक बौद्धिकता द्वारा

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 51-57 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

संचालित होती है। दूसरा तरीका है अंतर्दृष्टि, प्रेम, या हृदय द्वारा सीधी अनुभूति, जो हमें वास्तविकता से एक साथ जुड़ने की अनुमति देती है, जैसे ही यह एक अंतर्दृष्टिपूर्ण स्पष्टता के क्षण में स्वयं को प्रकट करती है। अपनी कुछ काव्य रचनाओं में इकबाल बौद्धिकता के महत्व को कम करते हुए प्रतीत होते हैं, जैसा कि इन पंक्तियों में देखा जा सकता है: "क्या तुम प्रेम के मार्ग पर बौद्धिकता द्वारा मार्गदर्शन पाओगे? क्या तुम बुझते हुए दीपक की रौशनी से सूरज की तलाश करोगे?"

4. नैतिक ढाँचा: नैतिक उत्कृष्टता के लिए शिक्षा

नैतिक और आध्यात्मिक विकास:

इकबाल के लिए, शिक्षा केवल बौद्धिक नहीं बल्कि गहरे रूप से नैतिक होती है। यह ऐसे गुणों को आत्मसात करने का अवसर प्रदान करती है, जैसे साहस, ईमानदारी और सहानुभूति, जो व्यक्तिगत और सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक हैं। उनका दर्शन मानव अस्तित्व के नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक आयामों को जोड़ता है, और इसका उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का विकास करना है जो नैतिक अखंडता का प्रतीक हों और समाज में सार्थक योगदान करें। नैतिक शिक्षा को सत्य, न्याय और मानवता के प्रति गहरे प्रेम को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि व्यक्ति उच्चतम आदर्शों के लिए प्रयास करें। इकबाल शिक्षा को एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया मानते हैं जो आत्मता (ख़ुदी) को पोषित करती है। यह आत्मता अहंकार नहीं है, बल्कि यह अपनी क्षमता को दिव्य इच्छा के अनुरूप पहचानने की प्रक्रिया है।

उपयोगिता से परे उद्देश्य:

इकबाल उस उपयोगितावादी दृष्टिकोण की आलोचना करते हैं, जो शिक्षा को केवल आर्थिक लक्ष्यों तक सीमित करता है। इसके बजाय, वह शिक्षा की भूमिका को इस प्रकार समझते हैं कि यह नैतिक व्यक्तियों का निर्माण करे जो मानवता की सामूहिक भलाई में योगदान दे सकें।

5. समाजिक-राजनीतिक दर्शन: सशक्तिकरण के लिए शिक्षा

ज्ञान के माध्यम से मुक्ति:

इकबाल शिक्षा को सशक्तिकरण और अज्ञान, उत्पीड़न और उपनिवेशी अधीनता से मुक्ति का एक उपकरण मानते हैं। इकबाल के दर्शन में, "ज्ञान के माध्यम से मुक्ति" का मतलब यह है कि ज्ञान की सक्रिय खोज–विशेष रूप से आध्यात्मिक और आत्म-जागरूकता–व्यक्तियों को सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। जब व्यक्ति अपनी "ख़ुदी" (सच्ची आत्मा) को पहचानते हैं, तो वे अज्ञानता और समाजिक प्रतिबंधों को पार कर सकते हैं, और अपनी पूरी क्षमता को खोल सकते हैं। यह सशक्तिकरण व्यक्ति को व्यक्तिगत सीमाओं से ऊपर उठने और दिव्य इच्छा के साथ सामंजस्य स्थापित कर अपने भाग्य को आकार देने की शक्ति प्रदान करता है। इकबाल के लिए, ज्ञान के माध्यम से मुक्ति केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बारे में नहीं है, बल्कि यह सामूहिक सशक्तिकरण के बारे में भी है। आध्यात्मिक दृष्टि और बौद्धिक प्रगति को सामंजस्यपूर्ण रूप से जोड़कर, व्यक्ति और समाज अज्ञानता, निष्क्रियता और उत्पीड़न की बेड़ियों से मुक्त हो सकते हैं। यह परिवर्तनकारी प्रक्रिया, जो इकबाल के दृष्टिकोण में निहित है, आज की समकालीन चुनौतियों के लिए भी गहरे रूप से प्रासंगिक है।

राष्ट्र-निर्माण:

इकबाल शिक्षा को एक आत्मनिर्भर और नैतिक रूप से दृढ़ राष्ट्र के निर्माण से जोड़ते हैं, और व्यक्तियों से यह आग्रह करते हैं कि वे अपनी व्यक्तिगत वृद्धि को अपने समुदाय के प्रति जिम्मेदारियों के साथ संतुलित करें। एक राष्ट्र तब अपनी पहचान को सही मायने में पहचानता है, जब वह अपने मूल स्वरूप से सच्चा रहता है। व्यक्तित्व की वृद्धि के लिए एक और महत्वपूर्ण तत्व स्वतंत्रता है। इकबाल के अनुसार, कोई भी व्यक्ति अपनी छिपी हुई क्षमता को तब तक नहीं पहचान सकता जब तक उसे अपनी ताकत और कमजोरियों को परीक्षण करने और अन्वेषण करने की स्वतंत्रता न हो।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 51-57 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

6. विश्ववादी दर्शन: सीमाओं के परे

शिक्षा को एक सेतु के रूप में:

इकबाल शिक्षा को जाति, राष्ट्रीयता और धर्म की सीमाओं को पार करने का एक साधन मानते हैं। यह एक ऐसी भावना को बढ़ावा देनी चाहिए जो साझा मानव मूल्यों पर आधारित सार्वभौमिक भ्रातृत्व का निर्माण करे। शिक्षा, जो व्यक्तित्व के पोषण का प्रतीक है, एक जानबूझकर की गई प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करना है। मिल इसे इस प्रकार वर्णित करते हैं: "वह संस्कृति जो प्रत्येक पीढ़ी जानबूझकर अपनी उत्तराधिकारियों को देती है, ताकि वे कम से कम मौजूदा स्तर की प्रगति को बनाए रख सकें, और आदर्श रूप से इसे और बेहतर बना सकें।" इसी प्रकार, के. जी. सैयदैन यह कहते हैं कि शिक्षा, अपने सच्चे अर्थ में, सभी सांस्कृतिक प्रभावों को समाहित करती है जो व्यक्तियों और समुदायों के जीवन को आकार देती हैं। इस दृष्टिकोण से, एक असाधारण रचनात्मक विचारक का उदय, जिनके पास एक अद्वितीय संदेश या नए मूल्य हों, शिक्षा के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जितना अधिक उनके विचार उनके समकालीनों के साथ गूंजते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं, उतना ही उनका प्रभाव एक शैक्षिक बल के रूप में बढ़ता है।

पूर्वी और पश्चिमी एकता:

इकबाल इस्लामी परंपराओं का मूल्यांकन करते हुए, पश्चिमी वैज्ञानिक प्रगति से सीखने की भी वकालत करते हैं, और दोनों संसारों के सर्वश्रेष्ठ का एकीकरण करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

7. शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षक की भूमिका:

शिक्षक केवल एक शिक्षक नहीं होते, बल्कि वे एक मार्गदर्शक होते हैं जो आत्म-खोज और नैतिक उत्कृष्टता को प्रेरित करते हैं। शिक्षक शैक्षिक प्रणाली का केंद्र होते हैं, और उनके बिना कोई शैक्षिक कार्यक्रम की कल्पना भी नहीं की जा सकती। शिक्षक समाज की रीढ़ होते हैं, जो केवल शिक्षकों के रूप में नहीं, बल्कि शिष्टाचार के मार्गदर्शकों और मानवता के संरक्षकों के रूप में कार्य करते हैं। इकबाल, जो एक आदर्शवादी थे, मानते थे कि शिक्षकों को अपने छात्रों के आध्यात्मिक माता-पिता के रूप में कार्य करना चाहिए। इकबाल के अनुसार, शिक्षकों को अपने आध्यात्मिक अनुभवों को छात्रों पर थोपना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें अपने प्राकृतिक प्रतिभाओं के अनुसार अपनी क्षमताओं की खोज और विकास में मार्गदर्शन करना चाहिए। शिक्षक छात्रों के विकास को पोषित करने और उनके व्यक्तित्व को समाज के उत्थान के लिए आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। असल में, शिक्षक समाज के संरक्षक और राष्ट्र के निर्माता होते हैं।

सीखना एक सक्रिय संलग्नता के रूप में:

इकबाल ने उस शिक्षा के महत्व पर जोर दिया जो व्यक्तियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के योग्य बनाए। उन्होंने लोगों को निष्क्रिय रहने के बजाय सक्रिय रूप से रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने की प्रेरणा दी, ताकि वे अपनी व्यक्तित्व को सशक्त कर सकें और बदले में अपने राष्ट्र को भी मजबूत बना सकें। उनके क्रियावादी दर्शन के अनुसार, यह दुनिया, स्वर्ग, और यहां तक कि नर्क भी क्रिया और गति से आकारित होते हैं। उनके अनुसार, मनुष्य न तो स्वाभाविक रूप से स्वर्गदूतों जैसे होते हैं और न ही शैतान जैसे; यह उनकी क्रियाएँ और कर्म ही होते हैं जो उन्हें परिभाषित करते हैं। बाल-ए-जिब्रील में उनकी कविता इस विचार को उजागर करती है कि क्रिया के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करना ही सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है। गति जीवन में अर्थ और जीवंतता लाती है, क्योंकि यह वास्तविकता का प्रतीक होती है, जबकि स्थिरता केवल एक भ्रांति होती है।

इकबाल का दृष्टिकोण एक सक्रिय, सहभागिता-आधारित शिक्षण प्रक्रिया का सुझाव देता है, जिसमें छात्रों को सवाल करने, अन्वेषण करने और नवाचार करने के लिए प्रेरित किया जाता है। शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया में, इकबाल शिक्षक को एक केंद्रीय और विशिष्ट व्यक्ति मानते हैं, जो छात्र के व्यक्तित्व को आकार देने और नैतिक विकास

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 51-57 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से, इकबाल शिक्षक को एक प्रमुख सहायक मानते हैं, जो छात्रों को समस्याओं की पहचान करने, प्रयोग करने और उन्हें व्यवस्थित रूप से हल करने के अवसर प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपने अनुभवों से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार की गतिविधियाँ रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं और छात्रों को नए परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता विकसित करने में मदद करती हैं। इकबाल कठोर अनुशासनात्मक प्रथाओं का विरोध करते हुए यह मानते थे कि शिक्षकों को ऐसी गतिविधियाँ डिजाइन करनी चाहिए जो बच्चों की स्वाभाविक रुचियों के अनुरूप हों। ऐसा करने से अनुशासनहीनता की समस्याओं को टाला जा सकता है, और छात्र अपनी प्राकृतिक क्षमताओं की खोज और पोषण कर सकते हैं। इकबाल के अनुसार: "वह दृष्टि की नई जिंदगियाँ पैदा करता है, और रेगिस्तान में बगिया को खिलाता है; हम सभी उसकी आग से भावनात्मक रूप से प्रेरित होते हैं; वरना हम पानी और मिट्टी के गरीब प्राणी होते। वह नंगे बौद्धिकता को नया रूप देता है; और उसकी दरिद्रता को समृद्धि से भर देता है।"

दार्शनिक प्रभाव और प्रासंगिकता

अल्लामा इकबाल के शैक्षिक दर्शन को सबसे अच्छा संरचनावाद (Constructivism) के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। यह सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि शिक्षार्थी ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते, बल्कि वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार होते हैं। वे दुनिया के साथ संवाद करके और अपने अनुभवों पर विचार करके समझ का निर्माण करते हैं, इस प्रकार अनूठे मानसिक ढांचे तैयार करते हैं और नए ज्ञान को अपने पूर्व ज्ञान या स्कीमाओं के साथ एकीकृत करते हैं।

अल्लामा इकबाल की प्रमुख व्याख्यान श्रंखला "इस्लाम में धार्मिक विचारों का पुनर्निर्माण" (1930) का गहरा विश्लेषण विज्ञान, धर्म और दर्शन के बीच चल रही तनावपूर्ण स्थिति पर उनके विचारों को उजागर करता है। ये व्याख्यान मानव ज्ञान, मानव आत्मा और अल्लाह के सिद्धांत के संयोजन पर नई दृष्टियाँ प्रदान करते हैं। इकबाल ने इस्लामी सभ्यता के गौरवपूर्ण इतिहास की गहरी सराहना की और इसके समकालीन चुनौतियों को लेकर चिंता व्यक्त की। वे इसकी पूर्व महानता को पुनः स्थापित करना चाहते थे। इतिहास के हमारे वर्तमान समझ पर गहरे प्रभाव को पहचानते हुए, इकबाल ने इतिहास की शिक्षा और ऐतिहासिक विकास के अध्ययन के महत्व पर बल दिया। उन्होंने सांस्कृतिक धरोहर को जीवनशक्ति और प्रेरणा का स्रोत मानते हुए, व्यक्तियों को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं से शक्ति और मार्गदर्शन लेने के लिए प्रेरित किया।

इकबाल का शैक्षिक दर्शन अस्तित्ववाद और आदर्शवाद का इस्लामी पुन:कल्पन और व्यावहारिकता (प्राग्मेटिज़्म) का मिश्रण है। यह व्यक्तियों और समाजों को निम्नलिखित चुनौतियाँ देता है:

I. शिक्षा के माध्यम से उच्च उद्देश्य की खोज करें।
II. बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक आयामों का संतुलन बनाए रखें।
III. आजीवन शिक्षा और गतिशील विकास में संलग्न रहें।

समकालीन युग में, इकबाल के विचार उपनिवेशवाद मुक्ति, समग्र शिक्षा, और नैतिक नेतृत्व पर होने वाली चर्चाओं में गूंजते हैं, जिससे उनका दर्शन शाश्वत और वैश्विक रूप से प्रासंगिक बनता है। वास्तव में, इकबाल का शैक्षिक ढांचा नैतिक उत्कृष्टता पर बल देता है, जिसे वह व्यक्तिगत विकास और समाज की सामूहिक प्रगति के लिए आवश्यक मानते थे। यह दर्शन आधुनिक शैक्षिक प्रणालियों को नैतिक और आध्यात्मिक विकास को बौद्धिक उपलब्धियों के साथ प्राथमिकता देने के लिए चुनौती देता है। इकबाल ने ख़ुदी (स्वत्व) के विकास पर जोर दिया, जिसे उन्होंने आत्म-जागरूकता, आत्म-अनुशासन और आत्म-प्रकाशन की एक गतिशील, विकसित होती प्रक्रिया के रूप में देखा। इकबाल के अनुसार, शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान नहीं करनी चाहिए, बल्कि

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 51-57 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

व्यक्तियों की आंतरिक क्षमता और नैतिक चरित्र को भी विकसित करना चाहिए।

इकबाल का मानना था कि शिक्षा को बौद्धिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को भी समाहित करना चाहिए। उनका कहना था कि केवल भौतिकवादी शिक्षा आत्मा की उपेक्षा करती है और नैतिक पतन की ओर ले जाती है। जबकि इकबाल ने वैश्विक ज्ञान और प्रगति की सराहना की, उन्होंने सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान के महत्व पर भी बल दिया। उन्होंने आधुनिक शिक्षा और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता का समर्थन किया।

निष्कर्ष

इकबाल का शैक्षिक दर्शन समकालीन शिक्षा में चुनौतियों का समाधान करने में गहरे रूप से प्रासंगिक है। उनकी समग्र विकास, नैतिक और आध्यात्मिक आधार, आलोचनात्मक सोच, और गतिशील प्रगति पर जोर देने वाली दृष्टि एक ऐसा ढांचा प्रस्तुत करती है जो सांस्कृतिक और कालक्रमिक सीमाओं को पार करता है। यह आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को न केवल कुशल पेशेवरों को बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक रूप से जागरूक व्यक्तियों को तैयार करने की चुनौती देता है, जो समाज को रूपांतरित करने में सक्षम हों। इकबाल का शिक्षा दर्शन समकालीन पाठ्यक्रम डिजाइन, नैतिक शिक्षा, और परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन के बारे में चर्चाओं में अत्यंत प्रासंगिक बना हुआ है। उनका आत्म-जागरूकता, रचनात्मकता, और नैतिक जिम्मेदारी पर जोर देना दुनिया भर के शिक्षकों और छात्रों को प्रेरित करता है।

संदर्भ:

[1]. Iqbal, M. (1918) Ramuz-i-Bekhudi (Secrets of Selflessness), as cited in Smith, J. (2021). Philosophy and Identity in the Subcontinent. Oxford University Press, p. 45.
[2]. https://www.allamaiqbal.com/publications/journals/review/apr00/05.htm .
[3]. https://socialsciencejournal.in/assets/archives/2017/vol3issue5/3-5-20-547.pdf
[4]. Telwani, A. A. (2019) *Scientific Research (IJAMSR),* 2(1), 33-34. Retrieved from ijamsr.com .
[5]. https://www.qurtuba.edu.pk/thedialogue/dialogue/The%20Dialogue/3_2/08_Zubaida_Khanum.pdf .
[6]. https://brjis.bahriauni.com/index.php/ojs/issue/view/8 .
[7]. https://www.allamaiqbal.com/publications/journals/review/apr63/5.htm.
[8]. Chawla, M. I. (2025) *Allama Iqbal's Educational Philosophy*, Hilal Pakistan. Retrieved from https://hilal.gov.pk/view-article.php?i=8029
[9]. Iqbal, M. (1918) *Ramuzp-i-Bekhudi* (Secrets of Selflessness).
[10]. Khan, Ayesha (2020) *Iqbal's Vision of Education and Selfhood*, Cambridge University Press, pp. 34–56.
[11]. https://hilal.gov.pk/view-article.php?i=8029 .
[12]. Saiyidain, K. G. (1945) *Iqbal's educational philosophy*, Kazi Pubns Inc.